सुधा ओम् ढींगरा

अनुत्तरित

दरवाजे पर ही वह ठिठक गया। बन्द दरवाजा खोल नहीं पाया। अन्दर से बॉस की फोन पर किसी से बात करने की आवाज आ रही थी।

"सर, कम्पनी को परम्परावादी तरीके से चलानेवाला लीडर चाहिए और यंग ब्लड, यह कन्जर्वेटिव नहीं, बहुत आक्रामक प्रवृत्ति का है। क्या! वह डेमोक्रेटिक भी नहीं।"

"नहीं सर, रिपब्लिकन नहीं...मुझे तो अभी-अभी पता चला, वह इंडिपेंडेंट है। जी...जी समझ गए आप...उदारवादी व्यक्ति देश और कम्पनी नहीं चला सकता।"

बॉस कलिङ्ग्लेन...नहीं सर...वह पहले ही अलीक्षन मददगार होने से काफी प्रमोशन ले चुका है। तरक्की के लिए अब उसे कुछ वर्ष इन्तजार करने दें। सर, अपने बुजुर्गों की बुजुर्गी को ये लोग कैसे कायम रखते हैं।"

"कुछी गुर्जे...पर यहाँ भी नहीं बात है, भक्तिसम होने का लाभ तो रही है। बॉस और कुत्ते दोनों इस पद के काबिल नहीं।"

"और सुमित...!"

अपना नाम सुनकर वह सतर्क हो गया।

"सर, पॉलिसीस बताकर भारतीयों को पद देने की जरूरत नहीं होती, बस उसका वेतन थोड़ा बढ़ा दें, अच्छा बोनस दे दें और बस पद का लालच ...हम लोगों का काम कर देंगे। बहुत मेहनती होते हैं। जी...जी सर, सुमित के लिए, यह सब सुविधाएँ मैं अपने बजट से कर सकता हूँ।"

"सर, हटा दें इस पद को। यह बड़ी महँगी पोजीशन है, कम्पनी के खर्च बहुत बढ़ जाएँगे और काम तो सुमित से करवा लेंगे, मुझ पर छोड़िए।"

उसे लगा, उसका शरीर शून्य में लटक रहा है। देश की सिलवटियों से भागकर वह यहाँ आया था। अब यह भागकर जाए तो कहाँ जाए...! ❑

मर्यादा

"दादीजी, पापा रोज शराब पीकर, मेरी माँ को पीटते हैं। आप राम-राम करती रहती हैं, उन्हें रोकतीं क्यों नहीं?" पोती ने दादीजी से पूछा।

"अरे मेरा कहा किसी को सुनना है? जो तब भी कहने पर बहू पर हाथ उठाने से रुक जाएगा और फिर पति-पत्नी का मामला है, मैं बीच में कैसे बोल सकती हूँ।"

"आप जब अपने कमरे से मेरी माँ को सिसकता सुनती हैं, तब तो ये आपकी सारी बातें सुनते हैं, और फिर पति-पत्नी की बात कहाँ रह गई? रोज तमाशा होता है।"

"वह कमरे से सीधा मेरे कमरे में आता है, मेरी माँ को तकलीफ होती है, मुझे भी अपनी माँ की तरह, उसका, मेरे कमरे में आना अच्छा नहीं लगता।"

"दादीजी, आप पापा की माँ हैं, आपका हक सबसे पहले है, पर आपके कमरे से निकलकर, वे शराब पीते हैं, और माँ से लड़ते-झगड़ते हैं, उन्हें पीटते हैं, यह गलत है। पापा को बोल दीजिएगा कि अगर आज मेरी माँ पर उन्होंने हाथ उठाया, तो हम तीनों बहनें, माँ के साथ खड़ी हो जाएँगी और जरूरत पड़ी तो पुलिस थाने भी चली जाएँगी, पर माँ को पिटने नहीं देंगी।"

"हे राम, यह सब दिखाने से पहले मुझे उठा क्यों नहीं लेता, मेरा बेटा बेचारा अकेला...काश! मेरा पोता होता, यह दिन तो न देखना पड़ता, घर की मर्यादा रखता।"

"आप किस मर्यादा की बात करती हैं...मर्यादा सिर्फ पुरुष की ही नहीं, औरत की भी होती है...।" ❑

अनुसरण

ममता अपने बेटे के व्यवहार से हैरान है और परेशान भी। वह स्कूल से आते ही हल्का-सा कुछ खाकर, यह कहकर अपने कमरे में बन्द हो जाता है कि वह होमवर्क कर रहा है, उसे बाधित न किया जाए। कई दिन ममता देखती रही...बेटा बड़ा हो गया है, कैसे कुछ पूछे? कैसे कुछ कहे? कद में वह अपने पापा से भी लम्बा है।

जब चाहती थी कि उसका पति उसकी तरफ ध्यान दे पर वह लापरवाही से बोला, "ममता, हमारा बेटा बड़ा हो रहा है। उसे अब बच्चा मत समझो। इस उम्र में लड़कों में कई तरह के बदलाव आते हैं। उसे उन्हें समझने दो। क्या हुआ अगर वह अकेलापन चाहता है। हर बात की चिन्ता मत किया करो।"

वह चुप ममता कुछ बोली तो नहीं, पर माँ की छठी इन्द्री पुलिसवालियों-सी उसके भीतर बजती रही। एक दिन उसने उसके कमरे के दोनों दरवाजों के अन्दर दुतरफी टेप लगा दी। बेटे ने कमरे का दरवाजा बन्द किया पर वह पूरी तरह बन्द हुआ नहीं। बेटे को पता नहीं चला। थोड़ी देर बाद ममता दरवाजा खोलकर भीतर चली गई। बेटे की पीठ दरवाजे की तरफ थी और कम्प्यूटर का मोनीटर दरवाजे की ओर। वह आराम से बैठा कम्प्यूटर पर पोर्न साइट देख रहा था। ममता ने कमरे में घुसते ही वह सब देख लिया था, बेटे ने माँ का आभास होते ही उसे बन्द करना चाहा।

ममता गुस्सा गई, अपने को काबू में करते हुए बोली, "बेटा! होम वर्क के समय यह क्या देख रहा है तू! ये साइट्स नहीं देखते। अपना होम वर्क करो।"

"ममा, डैड कई बार आधी रात को उठकर ये साइट्स देखते हैं तो मैं दिन में क्यों नहीं देख सकता?"

"क...क्या कह रहा है तू?" ममता के मुँह से लड़खड़ाते हुए शब्द निकले।

"हाँ ममा, डैड जब आधी रात को प्रोजेक्ट पर काम करने स्टडीरूम में जाते हैं तो यही देखते हैं। एकबार मैं पानी पीने रसोई में गया तो स्टडीरूम का दरवाजा खुला था, मैं अन्दर चला गया। ऐसी ही साइट खुली थी। पापा शौचालय में थे।" ममता का शरीर ग्लानि में पिघलने लगा। ❑

101,Guyman Court,Morrisville,
NC-27560(U.S.A.)
Sudhadrishti@gmail.com